आज का पुरुषार्थ 1 Nov 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"हमें पुण्य का खाता ज़मा करना है .. तो .. सबके प्रति शुभ भावनायें रखते हुए .. दुआयें देते चले "*

बाबा ने हम सभी को बहुत **सुन्दर सीख** दी हुई है कि →

" बच्चे तुम सबको दुआयें देनी है .. और ऐसे कर्म करने है .. ऐसी सेवा करनी है .. ऐसा पुण्य कमाना है कि ... सबके दिल से तुम्हारे लिए दुआयें निकले "

जो मनुष्य **दुआयें** देते और लेते है उनके चित्त बहुत शान्त और सुखी रहता है। देने वालों को वह मिलता भी है। इसलिए हम इन दोनों का अब बहुत अच्छा **अभ्यास** करेंगे और **अनुभव** करेंगे कि .. " क्या मिलता है इनसे? "

सारे दिन में दो बार प्रैक्टिस करे, लोग आ जा रहे है। **संकल्प करे** →

" *इनका जीवन **निर्विघ्न** हो जायें .. यह भी मनुष्य से देवता बन जाये .. यह भी*

*बाबा से अपना अधिकार प्राप्त कर ले .. इनका भी **कल्याण** हो जायें .. यह भी बहुत सुखी हो जायें "*

ऐसा संकल्प करते चले, दो बार बैठ कर। ताकि फिर यह नेचर बन जायें। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कुछ अच्छे स्वमानों का अभ्यास करना। जैसे →

" मैं इष्ट देव देवी हूँ .. मैं विश्वकल्याणकारी हूँ .. मैं पूर्वज हूँ "

तो जो **इष्ट देवियाँ** है वह दुसरों के लिए ग़लत कैसे सोच सकते है? वह तो दुसरों को दुआयें देते है। उनके मंदिरों में भक्त जाते है दुआयें लेने। देवियों की दृष्टि से भी दुआयें मिलती है। हाथ से भी दुआयें मिलती है। शुभ भावनायें, दुसरे शब्दों में कह सकते है।

हम **पूर्वज** है, सबके बड़े है। तो बड़ों को तो सुन्दर फ्लो छोटो की और भेजना ही होता है। इसलिए हम दुआयें दे। सवेरे उठकर एक काम हम और करेंगे →

Globe के ऊपर खड़े होकर सारे संसार को दुआयें देंगे, **पूर्वज की स्मृति** में स्थित होके →

" सब आये हुए भगवान को पहचान ले .. सबका जीवन **सुखी** हो जाये .. सब तनाव से मुक्त हो जाये .. सभी **मानसिक रूप से मजबूत हो जायें** .. सब भय से मुक्त हो जाये "

बड़ा सुख मिलेगा। हमारे इन संकल्पों से बहुत सुन्दर vibrations संसार में पहुँचते रहेंगे।

भक्ति में शुरुआत ही होती है →

" सर्वे भवन्तु सुखिनः .. सर्वे सन्तु निरामया " ... सब सुखी हो।

अगर **महान आत्मायें, पुण्य आत्मायें यह संकल्प करेंगे** तो दुसरी आत्मायें सचमुच बहुत सुखी हो जायेंगे। क्योंकि श्रेष्ठ आत्माओं की संकल्पों में बहुत बल रहता है।

तो हम सब यह सुन्दर gift संसार को देते रहे और इसके रिटर्न को अनुभव करे .. क्या मिलता है? क्या होता है? **अनुभूति** क्या है?

हमें **दुआयें** लेनी भी है। मांगनी तो नहीं है? भक्त तो भगवान से मांगता है। परन्तु हमें मांगना नहीं है। ऐसे **कर्म** हमें करना है कि खुदा हमें स्वयं दुआयें दे, बहुत प्यार करे।

मांगने से तो बहुत थोड़ा मिलता है। अगर हम उनके कहें हुए बातों पर चलेंगे, अगर **सच्चे दिल** से उनके सेवा करेंगे, जिसको खुदाई खिदमतगार कहते है, तो उनकी दृष्टि हमपर रहेगी। उनकी दुआयें हमें बहुत प्राप्त होती रहेंगी।

अगर हम अपने कर्मों से, अपने चरित्रों से उनके नाम रोशन करते है, ताकि लोग कहे → सच में, यह तो भगवान के बच्चे है?

.. तो भी हमें उनकी **दुआयें** बहुत मिलती रहेगी।

और दूसरों को मदद करना, दुसरों के साथ प्यार से व्यवहार करना, दुसरों को सुख देना, **ईश्वरीय सेवाओं में** एक दुसरे के goof friend साथी बनकर रहना .. यह दुआयें लेने का साधन है।

इष्ट देव देवियाँ है हम सभी। आपस में रहते है। हमें एक दुसरे के लिए बहुत सुन्दर दृष्टि रखे। **मीठी दृष्टि रखे**, तो उससे एक दुसरे से दुआयें सबको मिलती रहेंगी और हमारे दुआओं के भण्डार भरपूर होते चलेंगे।

तो बहुत ध्यान देंगे .. **पुरुषार्थ** को सहज करने के लिए, पुण्य का खाता बढ़ाने के लिए, बीमारियों में और विघ्नों में सहज पार हो जाने के लिए .. दुआओं के खाते की बहुत जरूरत होती है।

.. और हम उसको भरपूर करेंगे ..

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org